International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 06-01-2023, Accepted: 28-01-2024, Published: 21-02-2024
Volume 10, Issue 1, 2024, Page No. 12-14

राजेश जोशी के काव्य में मानवीय मूल्यों के विविध पक्ष

माने अनिल लक्ष्मण
हिंदी विभाग, तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय, तिरुवारुर तमिलनाडु, भारत

सारांश
कवि राजेश जोशी अपने समय के बड़े कवि हैं उनकी कविताओं में मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति विविध संदर्भों में हमारे सामने प्रस्तुत होती हैं। कवि राजेश जोशी की कविताओं का वह दौर जहां वह अपने काव्य के माध्यम से बाजरवाद, राजनीति का अपराधीकरण तथा संवेदनहीनता जैसे मुद्दों पर गहन विचार दिखाई देते है। यह दौर राजेश जोशी की कविता ने परंपरा से अर्जित किया है। कवि राजेश जोशी की वह कविताएँ जो स्वाभाविक रूप से मनुष्य की बेहतरी के लिए उसके साथ खड़ी है। राजेश जोशी की कविता में विषयों की विविधता के कारण कोई मुख्य प्रवृति अभी तक नहीं पहचानी जा सकी है। बाजारवाद और भूमंडलीकरण ने एक तरह से पूरी सामाजिक सामाजिक संरचना को अव्यवस्थित कर दिया है जिसके कारण एक ही समय में अलग–अलग रंग के दृश्य उपस्थित हो रहें हैं। राजेश जोशी की कविताओं में स्त्री परंपरागत रूढ़ियों को और वर्जनाओं को तोड़ते हुए एक नए समाज का निर्माण कर रही हैं। जिसमें स्त्री को पुरुषवादी दृष्टिकोण से नहीं और न ही स्त्रीवादी दृष्टिकोण से जाँचा–परखा जाए इसके स्थान पर जाँच–परख का पैमाना मनुष्यता को बनाने का काम कवि करते हैं। सामंती एवं पूँजीवादी मूल्यों से ग्रसित शोषित एवं असंगठित समाज–व्यवस्था ने मनुष्यों को विवेक हीनता एवं चेतना विहीन बना दिया है। विकासशील देश भारत आज विश्व के विकसित देशों के कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है। भारत सरकार ने देश के कोने–कोने में जनसाधारण के सर्वांगीण विकास हेतु योजना बनाई। किंतु प्रशासनिकों की स्वार्थलिप्सा ने इन योजनाओं को पूर्णतः कार्यान्वित न होने दिया। परिणामतः आज भी अनेक ऐसे गाँव हैं, जहाँ शिक्षा स्कूलों में नहीं बल्कि झूलाघर में दी जाती है। राजेश जोशी की कविता 'खिलौना' की कुछ पंग्तियां दृष्टव्य है–

मूल शब्दः राजेश जोशी की कविता, जाति–पाँति, मनुष्यता

राजेश जोशी की कविता जाति धर्म की जंजीरों को तोड़कर समता की बात करती है। यह समता तभी सम्भव है जब सब मिलकर जाति–पाँति की दीवारों को तोड़कर एक हो जाए अर्थात संपूर्ण मानवता एक हो जाए। कवि राजेश जोशी की कविता शोषक और शोषितों का यथार्थ चित्रण कर शोषण के विरुद्ध अधिकार को बढ़ावा देती है। सामाजिक असमानता के शिकार, शोषित कमज़ोर वर्ग के लिए कविता एक ऐसे समाज को रचना चाहती है जो भेदभाव से मुक्त, समता पर आधारित हो। सभी मानवों का अपना जीवन है। उन्हें जीवन जीने की स्वतंत्रता मिले, विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता मिले, आर्थिक स्वतंत्रता मिले जिससे सभी मानव समाज मुख्य धारा में आ सके। अपने धरातल को पहचान कर, सुनिश्चित व सुनियोजित तरीक़े से स्वयं का विकास कर सके। अपने परिवार व बच्चों का भविष्य सुरक्षित करते हुए, एक स्वस्थ सामाजिक एवं संवेदनशील समाज का निर्माण कर सके। साहित्य की सबसे प्रमुख विधा कविता होने के कारण कविता को मनुष्यता की मातृभाषा कहा जाता है। कविता को समझना मनुष्यता के घेरे में ही संभव है, किंतु उसकी मौलिकता समय के साथ निरूपित होती है। वर्तमान समय भूमंडलीकरण का है, जिसके चलते साम्राज्यवादी शक्तियों का मानवीय जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश हो गया है। ऐसी स्थिति में राजेश जोशी की कविता का यथार्थ स्पष्ट होना आवश्यक है।

"विकसित होते एक गरीब समाज की कई पेचीदगियाँ होती है
कई पहेलियाँ और कई चक्कलसें
एक को सुलझाने में दूसरी और ज़्यादा उलझ जाती है

वह सिर्फ़ बच्चों की तरफ से सोचना चाहता था, जो संभव नहीं था

झूलाघरों का चलन तो उसके देखते–देखते ही शुरू हो चुका था"।[1]

जहाँ एक ओर मृत्यु की दहशत है तो दूसरी ओर उस दहशतयुक्त वातावरण के साथ स्वयं को समायोजित करने की अपूर्व जीवन–शक्ति। यह उपभोक्ता की संस्कृति वास्तव में सामाजिक मूल्यों, मानवीय–मूल्यों, सांस्कृतिक–मूल्यों का हनन करती है। मूल्यों की पतनशीलता इस कदर हावी है कि व्यक्ति सच बयान नहीं कर सकता, वह अन्याय का प्रतिकार नहीं कर सकता, यहाँ तक कि मुँह खोलने के पूर्व तय कर लेता हैं कि किसे हत्यारा बताने में वह सुरक्षित है। उसी कविता की अगली कुछ पंक्तियाँ है–

"बच्चों के अकेलेपन को एक नकली और हिंसक उत्तेजना
से भरने की एक भयावह कोशिश की जा रही थी
हमारा अन्याय ओर हमारी हिंसा जो हमेशा ही
गरीब बाल मज़दूरों और भिखारी बच्चों के सामने
एक दुत्कार की तरह प्रकट होती है अब
अब हमारे खिलौने में प्रकट हो रही हैं"।[2]

यह कविता समाज में एन–केन हो रहे बदलाव को दिखाना चाहती है। कविता में चित्रित समाज और उन बच्चों की जीवन प्रणाली को विविध पहलुओं से उजागर करती है। यह बच्चों के जीवन को उसकी विशिष्टता के साथ साथ उसे विस्तार में रचना चाहती है। यह एक सहज भाव की कविता है। कवि राजेश जोशी का काव्य मानवीय संवेदना का परिचायक है। उनके समग्र काव्य में मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है। अपने काव्य में कवि मानवीय मूल्यों को ऐसे वातावरण में खोजता है जिससे समाज में उसकी नींव कायम रहे। साथ ही शासन व्यवस्था से नाराज भी है क्योंकि उसे पता है कि समाज के बारे में आवाज बुलंद करने वालों का पुख्ता बंदोबस्त किया जाता है। उसका स्वातंत्र्य, उसका स्वाभिमान छीना जाता है। कवि राजेश जोशी

की कविता 'कवि की जगह' में कवि अपना दर्द बयां करते हैं। यथा–

"कहने को इस सबको कहने वाले कुछ कवि भी
हमेशा ही रहे जाते है समाज में
उनका पूरा पुख्ता बंदोबस्त था
और इस बात का भी कि उनकी बात का
कोई प्रभाव न बन पाए कहीं समाज में।"[3]

यह आंतरिक अकुलाहट कवि के मस्तिष्क की सतह को छूकर गुजर जाती है, हमारी रुह को छूते–छूते ठहर जाती है। मनुष्य की स्वतंत्रता को छीना जा रहा है। उसकी आवाज को दबाया जा रहा है। किन्तु कविता का दूसरा पक्ष भी सामने आता है। वर्तमान समय की कविता में सवाल तो है, लेकिन इस सूचीबद्ध घनांधकार में समस्याओं के समुंदर में कवि गतिमान उम्मीद के साहारे वह पूरे जोश से आगे बढ़ता दिखता है। कवि अपनी स्वतंत्रता, अपनी आशा–आकांक्षा के साथ आगे बढ़ने का प्रयास करता दिखाई देता है। लेकिन दिशा सूचक का अभाव बार–बार खलता है। कवि आगे लिखते है कि–

"इनाम इकराम का भी खासा इंतजाम था
और इस बात का भी कि उसकी किताब लोगों तक न पहुँचे
समाज कि संरचना इतनी दिलचस्प थी कि आदि से ज़्यादा आबादी
दो जून रोटी और कपड़े लत्तों कि फिक्र में ही
अपनी पूरी जिंदगी काट देती थी
उनके बच्चे कुपोषण के बाद भी अगर जिंदा रह जाते थे
तो वहीं धूल में खेलते हुए बड़े होते रहते।"[4]

राजेश जोशी सामाजिक–राजनैतिक संरचना के भीतर पल रही तथा शोषण पर टिकी व्यवस्था को दिखाते हुए एक सामाजीक जीवन पद्धति विकसित करने का प्रयास करने वाले कवि हैं। उनकी चिंताओं में व्यक्ति, समाज और मानवीय मूल्य काफी मुखर है। राजेश जोशी सुकून देने वाले कवि नहीं है वे बेचैन करने वाले कवि हैं। यह बेचैनी उनके सामाजिक–राजनैतिक व्यवस्था से असंतोष के कारण है। उनकी नजर में लिख–लिख कर दर्ज करना और असहाय होकर आत्महत्या तक कर लेने पर भी इस व्यवस्था के कान पर जूँ नहीं रेंगती। लेकिन कविता में कवि उसे जिस कलात्मक ढंग में प्रकट कर रहा है वह भी ध्यान देने लायक है। क्योंकि आज काव्य संवेदना की यह भी एक ध्वनि है। लेकिन यहां संवेदनशील होने के बजाय संवेदना का क्षरण ही दिखाई दे रहा है। राजेश जोशी की लंबी कविता 'रात किसी का घर नहीं' में इस प्रकार अभिव्यक्त किया है कि–

"रात गए सड़कों पर अकसर एक न एक आदमी ऐसा जरूर मिल जाता है
जो अपने घर का रास्ता भूल गया होता है
कभी–कभी कोई ऐसा भी होता है जो घर का रास्ता तो जानता है
पर अपने घर जाना नहीं चाहता।"[5]

कवि यहाँ परिवार से अलग होते व्यक्ति का दर्द बयां कर रहे हैं। पारिवारिक संबंध, रिस्ते नाते आदि एक दूसरे से अलग हैं। परिवार का हर सदस्य स्वछंद जीवन जीना चाहता है। जहाँ 'रात किसी का घर नहीं' शीर्षक कविता की इन पंक्तियों में पारिवारिक स्थिति अभिव्यक्त हुई है। कविता भारतीय समाज का सच व्यक्त कर रही है। 'रात किसी का घर नहीं' कविता एक ऐसे व्यक्तित्व की कविता है जो पारिवारिक व्यवस्था बदलने की अभिलाषी है। स्वतंत्रता से अभिप्राय विज्ञापनों की उपभोक्तावादी अंधी दौड़ में शामिल होना मात्र नहीं समझा जाना चाहिए। पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण और उपभोग का पर्याय मात्र बनाने वाले इस उत्तर–आधुनिक षडयंत्र को समझ लेना चाहिए। समाज में विविध रूपों से स्त्री की स्वतंत्रता पर रोक लगाई जा रही है। विभिन्न सभ्यताओं तथा विविध रूपों में जिस प्रकार उसके शरीर और सौन्दर्य को कभी पुरुष के एकांत और कभी सार्वजनिक उपभोग की वस्तु बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आज भी बाजार की शक्तियाँ अधिक सुनियोजित ढंग से वही सब कर रही है। राजेश जोशी के संवेदनशील ह्रदय ने समाज का सूक्ष्म निरीक्षण किया है। आज की आधुनिक नारी अपने कर्तव्य के साथ–साथ अपने अधिकारों के प्रति भी जागरूक है। वह समाज में स्वछंद होकर जीना चाहती है। स्वतंत्र होकर जीने के लिए तथा अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाती है। साथ ही वह हड़ताल करती है, रैलियों में हिस्सा लेती है। अपने अधिकारों के लिए वे अपने घर के अतिआवश्यक कार्यों को छोड़कर रैली में नारे लगाती हैं। यथा–

"कोई गाने की एक पंक्ति उठाता है
तो वे सुर में सुर मिलाकर गाने लगती हैं
रैली में चली स्त्रियाँ आसमान की ओर देखकर
समय का अनुमान लगाने की कोशिश करती हैं
कहीं कभी तो कुछ बेहतर होगा उनके भी जीवन में
यही सोचकर घर दुआर छोड़कर इस शहर तक आई हैं यें स्त्रियाँ
थक चुकी हैं बुरी तरह पर थके नहीं है उनके हौसले
थकान को परास्त करती उनकी आवाज़
शहर के शोर को बार–बार चीर देती है बीच से।"[6]

रैली में चलती स्त्रियाँ बुरी तरह तरह थक चुकी है परंतु उनके हौंसले अभी बुलंद है और उनकी आवाज थकान को परास्त कर शहर के शोर को बीच–बीच में चीर देती है। राजेश जोशी की कविताओं में नारी स्वतंत्रता के रास्ते और संघर्षों के अनेक चित्र है, परंतु उनके वर्णन का लहजा अपना खास है जो उनकी कविताओं में हमें दिखाई देता है। 'चाँद की वर्तनी' काव्य संग्रह में स्त्री के प्रतिरोध की कविताएं हैं। 'रैली में स्त्रियाँ' कविता में स्त्री के संघर्ष, स्त्री की स्वतंत्रता, स्त्री का प्रतिरोध और जुझारूपन की सक्षम अभिव्यक्ति हुई है। साथ ही स्त्री का घर से बाहर निकलना तथा घर और बाहर के मोर्चे पर एक साथ लड़ना सामंतवाद और पूंजीवाद दोनों के लिए खतरे की घंटी है। यथा–

"बाहर वह जितनी दिख रही
उससे उसके सपनों और उसके भीतर मची उथल–पुथल का
अनुमान लगाना नामुमकिन है
उसकी आँख में असमय चला आया आँसू
उसकी हार का नहीं
उसके गुस्से का बांध दरक जाने का संकेत है।"[7]

इस कविता से बदलते समय में स्त्री की वास्तविक शक्ति का एहसास होता है। राजेश जोशी अति आत्मीय रिस्ते अर्थात माँ, पत्नी के साथ–साथ बहन तथा बेटी के मानव–स्वातंत्र्य के बारे में भी लिखते हैं। राजेश जोशी की बहन पर लिखी कविता पढ़ते समय हर एक को अपनी बड़ी बहन याद आती है। अतः राजेश जोशी कहीं स्त्री की घर और बाहर दोहरी भूमिका की बात करते हैं। साथ ही कहीं ऐसे पुरुष की बात भी करते है जो हर पल स्त्री को अपने अंदर महसूस करता है। वे स्त्री के स्वातंत्र्य, संघर्ष, प्रतिरोध और प्रतिरोध की बात करते है, उसी समय अति संवेदनशील रिश्तों की बात भी करते हैं। राजेश जोशी की

कविताओं में स्त्री, माँ, बहन, बेटी, पत्नी और प्रेमिका इत्यादि अनेक रूपों में है, जिसे कवि राजेश जोशी अपनी लेखनी के माध्यम से विविध मूल्यों को उजागर करते दिखाई देते हैं।

संदर्भ सुचि

1. राजेश जोशी. (2006) चाँद की वर्तनी, राजकमल प्रकाशन– नयी दिल्ली पृ. सं.106
2. राजेश जोशी. (2006) चाँद की वर्तनी, राजकमल प्रकाशन– नयी दिल्ली पृ. सं. 106
3. राजेश जोशी. (2006). चाँद की वर्तनी. राजकमल प्रकाशन. नयी दिल्ली पृ. सं. 77
4. राजेश जोशी. (2006). चाँद की वर्तनी. राजकमल प्रकाशन. नयी दिल्ली पृ. सं. 76
5. राजेश जोशी. (2006) चाँद की वर्तनी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली पृ. सं.13
6. राजेश जोशी. (2006) चाँद की वर्तनी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली पृ. सं. 33
7. राजेश जोशी. (2006). चाँद की वर्तनी. राजकमल प्रकाशन. नयी दिल्ली पृ. सं. 33